पाठ–1
गुल्ली–डंडा

(भाग–1):–

गुल्ली–डंडा बच्चों की नजर में खेलों का राजा है। इस खेल को खेलने में किसी विशेष व खास जगह की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस खेल की शुरूआत बचपन से होती है, जहाँ खेलने के सिवाय और किसी चीज की आवश्यकता नहीं होती है। सुबह–सवेरे घर से निकल जाना एवं पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और उससे गुल्ली–डंडे बनाना बच्चों का पसंदीदा काम है। इसके लिए उनका उत्साह व लगन देखते ही बनता है। इसमें जात–पात, न ऊंच–नीच न ही गरीबी–अमीरी किसी भी तरह का भेदभाव देखने को नहीं मिलता है। माता–पिता के क्रोध को नजर अंदाज कर बच्चे अपनी काल्पनिक दुनिया में मग्न हो जाते हैं।

इसमें बच्चों को न खाने की सुध है और न ही नहाने की, सुध है तो सिर्फ गुल्ली और डंडे की। कहानी में जहाँ सिर्फ दो खिलाड़ी ही खेल रहे होते है। चाल पे चाल चली जा रही है। 'वाचक' हारने की स्थिति में आ जाता है। 'गया' से पिंड छुड़ाने के लिए वह अनुनय–विनय करता है लेकिन 'गया' पर इसका कोई असर नहीं पड़ता है। अनुनय–विनय का कोई प्रभाव न पड़ता देख, 'वाचक' घर की ओर भागता है। 'गया', वाचक को पकड़ लेता है और डंडा तानकर कहता है कि मेरा दाँव देकर जाओ। पदाया तो बड़े बहादुर बनकर पदने की बारी आने पर क्यों भागे जाते हो। 'गया' और 'वाचक' के बीच आपसी वाद–विवाद होता है।

'तुम दिन भर पदाओ तो मैं दिन भर पदता रहूँ।'

'हाँ, तुम्हें दिन भर पदना पड़ेगा।'

'न खाने जाऊँ न पीने जाऊँ'

'हाँ, मेरा दाँव दिये बिना कहीं नहीं जा सकते।'

'मैं तुम्हारा गुलाम हूँ ?'

'हाँ, मेरे गुलाम हो।'

'मैं घर जाता हूँ, देखूँ मेरा क्या कर लेते हो ?'

'घर कैसे जाओगे, कोई दिल्लगी है। दाँव दिया है, दाँव लेंगे।'

दोनों एक दूसरे पर तरह–तरह का आरोप लगाते है। 'वाचक' और 'गया' के बीच कहा–सुनी होती है। बात गाली–गलौज और मारमीट तक आ पहुँचती है।

(भाग–2):–

'वाचक' के पिता का तबादला होता है। माता–पिता दुखी हो जाते हैं, क्योंकि यहाँ बड़ी आमदनी की जगह थी। लेकिन 'वाचक' काफी खुश हो जाता है। वह अपनी बालमंडली के बीच तरह–तरह के संवादों को रच कौतूहलता का भाव भर देता है, उसके संवाद उसकी श्रेष्ठता को दर्शाते है। वह मिथ्या को सत्य मान लेता है। तभी तो वाचक के कहे हर संवाद जैसे– वहाँ के ऊंचे घर आसमान से बातें करते हैं। आदि पर पूरा विश्वास कर लेता है।

समय किसी का इंतजार नहीं करता। वाचक इंजीनियर बन उसी जिले का दौरा करता है और उसी कस्बे में पहुँचता है जहाँ उसका बचपन बीता था। उस स्थान को देखते ही मधुर बाल–स्मृतियाँ हृदय में जाग उठती है। वह यहाँ अपने बचपन को खोजना शुरू कर देता है। वह कहानी के उन क्रीड़ा–स्थल को देखने के लिए व्याकुल हो उठता है। बच्चों को गुल्ली–डंडा खेलते देख बचपन की याद आने लगता है। फिर खोज शुरू होती है। उस बचपन की खेल कि जिसे वह बचपन में खेला करता था। 'गया' से 'वाचक' की मुलाकात होती है। यह एक दुबला–पतला एवं लम्बा लड़का है। उसके माता–पिता, घर आदि के बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं है। हम उम्र बच्चों के बीच वह काफी लोकप्रिय है। क्यों न हो, गुल्ली–डंडा–चैंपियन जो ठहरा। हर कोई उसे अपना बनाना चाहता है। 'वाचक', 'गया' से पूछता है कि

''मतई, मोहन, दुर्गा यह सब कहाँ हैं ? कुछ खबर है ?''

''मतई तो मर गया, दुर्गा और मोहन दोनों डाकिये हो गये हैं, आप ?''

''मैं तो जिले का इंजीनियर हूँ ?''

''सरकार तो पहले ही बड़े जहीन थे।''

''अब कभी गुल्ली–डंडा खेलते हो ?''

'वाचक', 'गया' को गुल्ली डंडा खेलने के लिए कहता है। 'गया' पहले राजी नहीं होता है लेकिन बार–बार कहने पर वह राजी हो जाता है पर पहले जैसा खेल नहीं खेलता है।

'वाचक', 'गया' में परिवर्तन देखता है। जहां बड़ा–छोटा, ऊंच–नीच का भाव स्पष्ट दिखता है। बालपन का वह 'गया' आज बिल्कुल बदला हुआ है। बचपन के उसके अक्खड़ी स्वभाव को छोड़ दिया जाए तो वह सरल, सहज व आदर देने वाला प्रतीत होता है। पारिवारिक दायित्वबोध, सामाजिक हैसियत आदि उसमें प्रौढ़ता के भाव दिखने लगे हैं। अब लड़कपन के वे तेवर कहीं नजर नहीं आते है। वह 'गया' जो हारना नहीं जानता था, परिस्थिति ने उसे जानबूझ कर हारना सिखा दिया। भेद–भावहीन बचपन अब समझदार होने पर छोटे–बड़े, अमीर–गरीब का भेद समझने लगा है। लेकिन अपने वर्ग के लोगों के साथ चुनौती आने पर 'गया' पुनः अपने पुराने स्वरूप में आ खड़ा होता है उसी जीवटता से खेल में भाग लेता है। जैसा वह बचपन में खेला करता है। 'वाचक' के बार–बार आग्रह करने पर वह खेलने के लिए राजी होता है। लेकिन खेल भावना बिल्कुल ही गायब थी। 'वाचक' की चालाकी को समझते हुए भी आज 'गया' चुप है। मैंने धांधली की, बेइमानियाँ की, पर उसे जरा भी क्रोध न आया। इसलिए कि वह खेल नहीं रहा था, मुझे खेला रहा था, मेरा मान रख रहा था।

दूसरे दिन 'वाचक' के आने की खुशी और अनुरोध पर एक बार पुनः खेल का आयोजन होता है। वही चपलता, सहजता, अक्खड़पन व समर्पण का भाव दिख रहा है। आज 'गया' के सामने 'वाचक' अपने को काफी छोटा महसूस कर रहा है। क्योंकि 'वाचक' एक अफसर है और 'गया' एक साधारण व्यक्ति। 'वाचक' की अफसरी, 'वाचक' और 'गया' के बीच दीवार बन जाती है। 'वाचक' सोंचता है कि मैं केवल उसके दया के योग्य हूँ, वह मुझकों अपना जोड़ नहीं समझता आज 'गया' बड़ा हो गया है मैं छोटा हो गया हूँ। यह बालपन की भाव 'वाचक' के मन में उठ रहा है।

लेखकः– प्रेमचन्द